



ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 33

कुल पृष्ठ-8

5 से 11 अप्रैल, 2018

दयानन्दाब्द 194

सृष्टि सम्वत् 1960853119

सम्वत् 2075

चै.शु.-13

गुरुकुल मंझावली, जिला-फरीदाबाद का 24वाँ वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ का हुआ भव्य समापन
अनेक आर्य संन्यासी, विद्वान् एवं राजनेता उत्सव में पधारे

प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज के सान्निध्य में
योग साधना शिविर एवं ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ हुआ संचालित

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, गुरुकुल के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी, न्यास के मंत्री कै. रुद्रसेन जी एवं प्रसिद्ध दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से मंच की शोभा बढ़ाई

हरियाणा के वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु, उद्योग मंत्री श्री विपुल गोयल, राज्यसभा सांसद कुमारी शैलजा एवं स्थानीय विधायक श्री ललित नागर आदि राजनेताओं ने गुरुकुल को दिया आर्थिक अनुदान



गुरुकुल मंझावली, जिला-फरीदाबाद, हरियाणा का 24वाँ वार्षिकोत्सव 1 अप्रैल, 2018 को बड़ी भव्यता के साथ सम्पन्न हो गया। विदित हो कि गुरुकुल की विशाल यज्ञशाला में 26 मार्च, 2018 से 1 अप्रैल, 2018 तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में संचालित होता रहा तथा योग साधना शिविर भी उन्हीं की देखरेख में चला। समापन समारोह में यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, गुरुकुल के संचालक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, प्रसिद्ध दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी, वेदार्थ न्यास के मंत्री कै. रुद्रसेन जी, न्यास के प्रधान चौ. मामचन्द्र आर्य जी आदि के अतिरिक्त हरियाणा के वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु, उद्योग मंत्री श्री विपुल गोयल, राज्यसभा सांसद कुमारी शैलजा, स्थानीय विधायक श्री ललित नागर, डॉ. चन्द्रकेतु, श्री सुरेशचन्द्र आर्य आदि ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उपस्थित राजनैतिक नेताओं ने अपने स्वैच्छिक कोटे से गुरुकुल को आर्थिक अनुदान देकर सहयोग प्रदान किया।

समारोह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी जी ने बताया कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के द्वारा बच्चों को देशभक्ति, ईश्वरभक्ति, मातृ-पितृ भक्ति तथा समाजसेवा के संस्कार दिये जाते हैं। जबकि वर्तमान



शिक्षा प्रणाली बच्चों को उपरोक्त संस्कारों से वंचित रखती है। स्वामी जी ने कहा कि भारत की गौरवशाली संस्कृति की रक्षा के लिए आवश्यक है कि गुरुकुलों को शक्ति सम्पन्न बनाया जाये और अधिक से अधिक बच्चों को गुरुकुल में पढ़ने का अवसर दिया जाये। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक महात्मा मुंशीराम जी के जीवन के संस्मरण सुनाये। ठा. विक्रम सिंह जी ने देश की वर्तमान दुरावस्था पर क्षोभ व्यक्त किया और उसे बदलने के लिए आर्य समाज को राजनीति में आने की प्रेरणा दी। राज्यसभा सांसद कुमारी शैलजा ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जब स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार नहीं था तथा समाज में छुआ-छूत एवं भेदभाव चरम सीमा पर था, तब युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द

जी ने अपनी सिंह गर्जना के द्वारा सामाजिक क्रांति का शंखनाद किया था। स्वामी दयानन्द जी की कृपा से ही महिलाएँ आज समाज में प्रतिष्ठा पा रही हैं। कुमारी शैलजा ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की विशेष प्रशंसा की।

इस अवसर पर कै. अभिमन्यु ने गुरुकुलों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि गुरुकुलों में बच्चों को जो शिक्षा और संस्कार दिये जाते हैं वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं और उनके बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। उन्होंने अपने बचपन के संस्मरणों को सुनाते हुए कहा कि वे बचपन में गर्मियों की छुट्टी में किसी न किसी गुरुकुल में चले जाते थे और वहाँ रहकर वहाँ की दिनचर्या का पालन करते थे। उसी का परिणाम है कि आज वे राजनीति में किसी प्रकार के भटकाव का शिकार नहीं होते। श्री विपुल गोयल ने गुरुकुल शिक्षा को देश के लिए अत्यन्त आवश्यक बताते हुए कहा कि देश को बचाना है तो संस्कृत, संस्कृति तथा उनके केन्द्र गुरुकुलों को बचाना अत्यन्त आवश्यक है। श्री ललित नागर जी ने गुरुकुल मंझावली की प्रशंसा के पुल बांधते हुए कहा कि गुरुकुल के कारण उनके क्षेत्र में बुराईयाँ कम होती जा रही हैं और हमारा सौभाग्य है कि यह गुरुकुल हमारे क्षेत्र में चल रहा है। श्री सुरेशचन्द्र आर्य ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को देश के भविष्य के लिए अत्यन्त उपयोगी बताया और कहा कि हमें गुरुकुलों को चलाने के लिए इनका तन-मन-धन से सहयोग करना चाहिए।

इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि भविष्य में भी इसी प्रकार गुरुकुल के प्रति सहयोग की भावना बनाये रखें। समारोह में मंच का कुशल संचालन दिल्ली संस्कृत एकेडमी के पूर्व सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने किया। पूरे आयोजन की व्यवस्था में गुरुकुल के युवा आचार्य श्री जय कुमार, गुरुकुल पौधा के आचार्य श्री धनन्जय, आचार्य रामपाल शास्त्री, डॉ. रविन्द्र कुमार, श्री सोमदेव शास्त्री, श्री भूपेश आर्य आदि ने बड़ी तन्मयता के साथ समस्त व्यवस्था को संभाला। इस अवसर पर स्वामी शान्तानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी -कौंकरा, स्वामी चेतनानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, श्री देवनारायण शास्त्री, डॉ. चन्द्रकेतु, विद्यामित्र ठुकराल एवं श्रीमती कृष्णा ठुकराल, श्री नन्दलाल कालरा आदि अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह एवं सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।



सम्पादक - प्रो. विठ्ठलराव आर्य

सत्य – असत्य में सत्य को कैसे परखें ?

– वेद प्रकाश गुप्ता

श्री वेद प्रकाश गुप्ता जी आर्य सिद्धान्तों के मर्मज्ञ, अत्यन्त स्वाध्यायशील आर्य विद्वान् हैं। आपने प्रस्तुत लेख आर्य विद्वानों से समाधान प्राप्त करने की इच्छा से लिखा है। कृपया किसी भी शंका समाधान अथवा वार्तालाप के लिए श्री वेद प्रकाश गुप्ता जी से सम्पर्क करें। – सम्पादक

आर्य समाज के 10 नियमों में से, नियम 4 “सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।” तथा नियम 5 “सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।” संभवतः इन नियमों के पालन करने हेतु, मेरे ज्ञान में कोई साहित्य, दिशा निर्देश, प्रक्रिया, विधि किसी शास्त्र, पुस्तक आदि में उपलब्ध नहीं है कि विभिन्न कर्मों, तथ्यों को कैसे और किन किन कसौटियों पर कस कर यानी परख कर सत्य और लाभदायक होने को निर्धारित किया जाय, जिससे किसी से भी जाने अनजाने में त्रुटियाँ न हो सकें एवं आपसी विवाद का सर्वमान्य निराकरण हो सके। इससे सभी जनों को पता चल सकता है कि निश्चित रूप से त्रुटि हुई है या नहीं अन्यथा हर कोई अपनी अपनी बात को ही सत्य कहते हैं एवं लिखते हैं। किसी तथ्य, कर्म आदि के सत्य सत्य के ज्ञान, चयन के लिए इन कसौटियों के ज्ञान का होना अतिआवश्यक, अपरिहार्य है।

हम सभी प्रत्येक आर्य समाजियों, जनों को सभी कार्यों, कर्मों को करने से पहले उसके लक्ष्य यानी ध्येय को निर्धारित कर लेना चाहिए जो सर्वकल्याणकारी हो और सत्य, असत्य, लाभदायक और हानिकारक होने का विचार करके ही करना चाहिए तभी हम अनजाने में भी पाप कर्मों से बच कर अच्छे पुण्यमय कर्मों को कर सकते हैं। इस लेख का उद्देश्य सत्य, एवं लाभदायक होने की कसौटियों के प्रक्रिया को प्रतिपादित करना है जो उपरोक्त आर्य समाज के नियम 4 तथा 5 के अतिरिक्त अन्य दो आदेश निर्देश के पालन हेतु निम्नानुसार है।

(1) स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक की भूमिका के दूसरे पृष्ठ में लिखा है कि “और जो कहीं – कहीं भूल – चूक से अथवा शोधक तथा छापने कें भूल – चूक रह जाए, उसको जानने जनाने पर, जैसा वह सत्य होगा वैसा ही कर दिया जायेगा। और जो कोई पक्षपात से अन्यथा शंका व खंडन – मंडन करेगा, उस पर ध्यान न दिया जाएगा, हाँ जो वह मनुष्यमात्र का हितैषी होकर जनावेगा, उसको सत्य – सत्य समझने पर उसका मत सग्रहीत होगा।” इससे स्पष्ट है कि सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य पुस्तकों में लिखे तथ्यों, अर्थों भावार्थों में जो जो त्रुटियाँ संज्ञान में आयेगी उन सबका सुधार किया जायेगा।

(2) सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3 के 27वें पृष्ठ (भिन्न संस्करणों में भिन्न पृष्ठ नंबर हो सकता है।) में लिखा है “जैसे ऋग, यजुः, साम और अथर्व चारों वेद ही ईष्परकृत हैं। वैसे ऐतरेय, शतपथ, — — — ये चार वेदों के उपवेद इत्यादि सब ऋषि—मुनि के किये ग्रंथ हैं। इनमें जो— जो वेद विरुद्ध प्रतीत हों, उस—उस को छोड़ देना।” अतः इन तीनों संदर्भों आदेश निर्देश के अनुसार हमसे आपसे किसी भी ऋषि मुनि, स्वामी दयानंद जी एवं अन्य विद्वानों से भी गलती, भूल चूक अनजाने में हो सकती है और किसी भी पुस्तक में त्रुटि हो सकती है अतः सभी तथ्यों, कर्मकांडों आदि का सत्य के सभी कसौटियों पर परखा जाना है जिसमें किसी त्रुटि का ज्ञान में आते ही सुधार किया जाना अनुमन्य एवं अतिआवश्यक है। जब हम स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखित कालजयी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न समुल्लास पढ़ते हैं तब हम पाते हैं कि विभिन्न तथ्यों की सत्यता को सिद्ध करने हेतु स्वामी दयानंद जी ने कुल 3 कसौटियों को लिखा है, जो है, पहला— समस्त वेद एवं अन्य शास्त्र पुस्तकें आदि, दूसरा — पदार्थ विद्या यानी विज्ञान एवं तीसरा — प्रत्यक्ष प्रमाण। प्रत्येक मनुष्य को इन तीनों कसौटियों का ज्ञान होना अतिआवश्यक है जिससे वह स्वयं विभिन्न कर्मों, तथ्यों को इन कसौटियों पर कस सकें, जिससे कि हम सभी अज्ञानता में असत्य को सत्य, लाभदायक मान कर अनजाने त्रुटियों पर त्रुटियाँ न कर सकें। वेद के मूल मंत्रों में कोई त्रुटि नहीं हो सकती है। वेद मंत्रों एवं शास्त्रों के श्लोकों के अर्थ, भावार्थ जिन्हें ऋषियों मुनियों यानी मनुष्यों ने लिखा है, में त्रुटियाँ हो सकती जिन्हें तभी सत्य लाभदायक माना जाना चाहिए, जब वह विज्ञान एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के कसौटियों पर भी खरा उतरे अर्थात् वह प्रत्यक्ष में सर्वकल्याणकारी, लाभदायक ही हो। सभी कर्मकांडों को करने की प्रक्रिया ऋषि मुनियों द्वारा ही लिखी गयी है, अतः इसमें भी त्रुटि गलती हो सकती है और त्रुटि निवारण कर इसके पालन करने के लिये सभी व्यक्ति स्वतंत्र, समर्थ एवं सक्षम हैं। इससे यह भी विदित होता है कि सुधार, सत्य कर्म, कार्य को स्वीकार करने एवं पालन करने के लिए हम सबको चिन्तन मनन, वार्तालाप करते रहना चाहिए तथा सर्व सम्मत निर्णय लेना चाहिए।

अतः हमें तथ्यों, कर्मों को सत्य के 3 कसौटियों यानी (1) वेद शास्त्रों के आधार पर, (2) वैज्ञानिक तथ्यों, शोधों से एवं (3) प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात् स्वयं एवं अन्य मनुष्यजनों द्वारा अनुभूति कर, लाभदायक प्रक्रिया को निर्धारित करना है जो सर्वकल्याणकारी हो। यदि इसके अतिरिक्त कोई अन्य कसौटी संज्ञान में आये तो उसको भी संज्ञान में लेना चाहिए।

वेद मन्त्र के भाष्यों और अन्य ग्रन्थ के भाष्यों के सोचने, अर्थ भावार्थों के लिखने में गलती त्रुटियाँ हो सकती हैं क्योंकि इनकों

मनुष्यों के द्वारा लिखा गया है अतः जो जो गलत हो तो उसे छोड़ देना चाहिए परंतु विज्ञान एवम् प्रत्यक्षप्रमाण में त्रुटि की कोई सम्भावना नहीं है अतः इन दो कसौटियों पर समस्त एवं कर्मकांड खरा, सत्य, लाभदायक होना ही चाहिए। जिन्हें विज्ञान का ज्ञान नहीं है वह विज्ञान की पुस्तकों, विज्ञान शिक्षित परिचितों की सहायता ले लें। यदि इस प्रकार का ज्ञान सहायता मिलना संभव न हो तो विज्ञान कसौटी को भी छोड़ा यानी शिथिल किया जा सकता है। मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण का आधार ही देखना व ग्रहण करना चाहिए क्योंकि यह कसौटी सर्वाधिक महत्व का है और इसमें कोई त्रुटि नहीं हो सकती है। स्वामी दयानंद जी ने भी सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 7 के दूसरे पृष्ठ में ईश्वर को भी मात्र सब प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध करने की बात लिखा है और सिद्ध भी किया है। यदि हम कोई कर्म चाहे वह यज्ञ ही हो को जाने अनजाने में त्रुटिपूर्ण, हानिदायक प्रक्रिया से करते हैं तो हम ही गलत पाप के भागीदार होंगे चाहे उस प्रक्रिया को ऋषि मुनियों व विद्वानों ने ही लिखा हो, क्योंकि उन्होंने तो हमें उपरोक्तानुसार स्वयं सत्य सत्य, सही सही, लाभदायक विचारकर ही कर्मों को करने का स्पष्ट आदेश निर्देश लिखकर दे दिया है। उन्होंने



हमें भलीप्रकार से सचेत आगाह कर दिया है जिससे हम समस्त प्रकार से असत्य कर्मों, पापों से बचें और अन्य जनों को भी बचाएं। यदि पुरोहित अपने यजमान से, गुरु अपने शिष्यों से और माँ बाप अपने पुत्र पुत्रियों से गलत असत्य शिक्षा, कर्म कराते हैं तो पुरोहित, गुरु माँ बाप ही दोषी पाप के भागीदार होते हैं।

हम सभी देख सकते हैं कि प्रायः उपरोक्त तथ्यों का पालन, चिंतन, मनन नहीं किया जाता है विशेषकर वेद मंत्रों एवं शास्त्रों आदि के श्लोकों के भाष्य, अर्थ, भावार्थ ग्रहण करने में कि वह सभी मनुष्यमात्र के हित, लाभ में ही हो। यदि हम स्वामी दयानंद एवं अन्य ऋषि मुनि पर अटूट विश्वास कर, बगैर इन कसौटियों पर कसे हम अनजाने में पाप करते हैं तो हम ही पापी होंगे, न कि स्वामी दयानंद जी, ऋषि मुनि, क्योंकि उन्होंने उपरोक्तानुसार हम सभी को सतर्क सचेत यानी सही सत्य मार्ग पर ही चलने का आदेश दे दिया है। अब हम प्रत्येक कसौटियों पर चर्चा करते हैं।

(1) वेदों एवं शास्त्रों, ग्रंथों के आधार पर :- समस्त वेद एवं समस्त शास्त्र आदि की भाषा, सामान्य जनों के बोल चाल, लेखन आदि की भाषा में नहीं है अतः क्रियान्वयन, पालन करने के लिए वेद मंत्रों एवं शास्त्रों के श्लोकों के अर्थ, भवार्थ वही लेना, ग्रहण करना है जो विज्ञान एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के कसौटियों पर भी सत्य एवं सर्वकल्याणकारी हो। सभी भाष्यों में से, सत्य लाभदायक भाष्य तो केवल एक ही हो सकता है और असत्य अलाभदायक भाष्य कई कई हो सकते हैं। अतः समस्त भाष्यों में एक सत्य लाभदायक भाष्य की खोज, चयन के लिये सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास —1 में दिये गये निर्देश, उदाहरण के अनुसार जो भाष्य प्रसंग प्रकरणानुसार, विज्ञान के अनुसार, प्रत्यक्ष प्रमाण एवं स्वयं अवलोकन, अनुभव के आधार पर सर्वाधिक लाभदायक हो, उसे ही ग्रहण करना चाहिये। इसी समुल्लास 3 में निम्न प्रश्न उत्तर लिखा है :-

“प्रश्न — मित्रादि नामों से से सखा और इन्द्रादि देवों के प्रसिद्ध व्यवहार देखने से उन्ही का ग्रहण करना चाहिए।

उत्तर — यहाँ उनका ग्रहण करना योग्य नहीं, क्योंकि जो मनुष्य किसी का मित्र है, वही अन्य का शत्रु और किसी से उदासीन भी देखने में आता है। इससे मुख्यार्थ में सखा आदि का ग्रहण नहीं हो सकता, किन्तु जैसा परमेश्वर सब जगत् का निश्चित मित्र, न किसी का शत्रु और न किसी से उदासीन है, इससे भिन्न कोई भी जीव इस

प्रकार का कभी नहीं हो सकता। इसलिए परमात्मा ही का ग्रहण यहाँ होता है। हाँ, गौण अर्थ में मित्रादि शब्द से सुहृदममदादि मनुष्यों का ग्रहण होता है।”

इस उत्तर में लिखे तथ्यों को संज्ञान लेने पर हम पाते हैं कि प्रत्यक्ष प्रमाण में सभी तथ्य उचित है और यह सभी को स्वीकार होना चाहिए। इसी समुल्लास में सैन्धव शब्द का उदाहरण भी लिखा हुआ है कि भोजन प्रकरण में इसका अर्थ लवण यानी नमक लेना उचित होगा और गमनादि के समय घोड़ा लेना उचित होगा। स्वामी दयानंद जी ने जिन वेदों का एवं महात्मा नारायण स्वामी जी ने उपनिषदों के भाष्य लिखा है, वह समस्त कसौटियों पर सर्वोत्तम हैं क्योंकि वह भाष्य लिखते समय यह बात ध्यान में रखते थे कि वह समस्त कसौटियों पर सत्य खरा हो जबकि अन्य भाष्यकारों ने विज्ञान एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के कसौटियों को ध्यान में नहीं रखा। अतः हमें सभी कसौटियों पर खरा न उतरने वाले अन्य सभी भाष्यों को छोड़ देना चाहिये। नीचे एक उदाहरण मुंडकोपनिषद श्लोक 2/4 के भाष्यों का प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मुंडकोपनिषद के श्लोक “काली कराली च मनोजवा च सुलेहिता या च सधूम्रवर्णा। स्फुलिगं नी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वा। मुण्डो 2/4” की हिंदी भाष्य के तीन पुस्तकों में अलग अलग भिन्न अर्थ लिखे हैं, जो नीचे लिखा है। अन्य पुस्तकों में इसी श्लोक के अन्य भिन्न भिन्न अर्थ भावार्थ लिखे गये होंगे जिनको भी बगैर परीक्षण के ग्रहण नहीं करना चाहिए। एक पुस्तक का भावार्थ लिखा है कि “जिस समय अग्नि इन सात दशाओं में अर्थात् वेग से जल रही हो उस समय होम करना चाहिए। एक ओर काला धूम निकल रहा हो। दूसरे देखने से भयंकर मालूम हो। रक्तवर्ण लपटें निकल रही हों। चारों ओर धूम फैलने से आकाश धूम वर्ण बना रहे और चिनगारियाँ छोटी छोटी उठ रही हों। और प्रत्येक वर्ण की प्रकाशकर्त्री अग्नि देवी प्रकाश कर रही हो, यह सात दशा हैं, जिस समय अग्नि में होम करना चाहिये। आशय यह है कि बुझी हुई अग्नि में अग्निहोत्र करना ठीक नहीं, किन्तु अच्छी जलती हुई अग्नि में होम करना चाहिये।”

द्वितीय श्री विद्यारत्न जी द्वारा लिखित हिंदी भाष्य में इस श्लोक का अर्थ लिखा है “लपटें मारती हुई यज्ञाग्नि रूपी” देवी की सात जिह्वाएं हैं, ‘काली’ ‘कराली’ (भूरे रंग की), ‘मन’ के समान वेग से उठने वाली ‘मनोजवा’ (लौयुक्त अग्नि), रक्तवर्ण वाली ‘सुलोहिता’ (लौरहित कोयले, कड़े की अग्नि), धूमयुक्त (धुवाँयुक्त अग्नि) ‘सुधूम्रवर्णा’, चिनगारियों वाली ‘स्फुलिगिनी’, भिन्न भिन्न रूपोंवाली ‘विष्वरूपी’।

तृतीय भाष्य महात्मा नारायण स्वामी जी ने इस श्लोक का अर्थ लिखा है “अग्नि की ज्वालारें” जो यज्ञ के लिये प्रज्वलित की जाती हैं। इन्हीं सात रूपों में से किसी न किसी रूप में हुआ करती हैं।” यह सोचने, शोधने की बात है कि इन तीनों भाष्यों के अर्थ, भावार्थ अलग अलग हैं जबकि इनमें केवल एक ही सत्य उचित, सर्वलाभदायक हो सकता है। हमें महात्मा नारायण स्वामी जी ही द्वारा लिखा अर्थ लेना चाहिये क्योंकि इसी से ही यज्ञ सबसे अधिक लाभदायक हो सकता है और यही विज्ञान एवं सभी लोगों द्वारा स्वयं एवं अन्य लोगों द्वारा प्रत्यक्ष देखने, अनुभव, अवलोकन, अनुभूति करके सत्यापित किया जा सकता है।

इसी प्रकार वेद मंत्रों आदि के विभिन्न भाष्यकारों के भावार्थों, अर्थों की तुलना कर सत्य सत्य भावार्थों का निर्णय किया जाना चाहिये जो सत्य की अन्य कसौटियों जैसे विज्ञान एवं प्रत्यक्ष प्रमाण में सत्य लाभदायक पाया जाये। किसी भी विद्वान द्वारा वही ग्रंथ, भाष्य लिखना चाहिए जिसे स्वामी दयानंद जी अथवा किसी अन्य विद्वान द्वारा न लिखा गया हो अथवा उनसे कोई त्रुटि, चूक हो गयी हो, जिसे तथ्यों कसौटियों पर सत्य सत्य की जाँच कर, समस्त विवरणों के साथ लिखा जाय, अन्यथा भ्रातियाँ, त्रुटियाँ ही होगी जैसा उपरोक्त तीन भाष्यों में है।

(2) वैज्ञानिक तथ्यों, शोधों से :- स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश में बार बार विज्ञान के लिए “पदार्थ विद्या” शब्द लिखा है जिसे आधुनिक विज्ञान में रसायन शास्त्र और भौतिक शास्त्र कहते हैं। हम सभी जानते हैं कि संसार में सभी पदार्थ जड़ हैं और उनसे हम सभी उनके भौतिक एवं रसायनिक गुणों के अनुसार ही लाभ हानि पाते हैं।

स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 2 में एक प्रश्न के उत्तर में लिखा है, “कहिए ज्योतिर्वित्! — जैसे यह पृथ्वी जड़ है, वैसे ही सूर्यादि लोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। क्या ये चेतन हैं, जो क्रोधित होके दुःख और शांत होके सुख दे सकें?” इसी प्रकार अग्नि, सूर्य, समस्त पदार्थ, समस्त ग्रह नक्षत्र आदि जड़ हैं जो अपने गुणों के अनुसार हमें मात्र ताप यानी गर्मी यानी उष्मा, प्रकाश आदि के अतिरिक्त कुछ भी नहीं कर सकते, के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दे सकते हैं।

उदाहरण में जब स्वस्थ मनुष्यगण घृत को सामान्य मात्रा में खाते हैं तब वह उससे प्रत्यक्ष प्रमाण में उत्तम स्वास्थ्य आदि पाते हैं। जब विज्ञान के आधार पर अध्ययन करते हैं तब हम पाते हैं कि घृत में 10 रसायन होते हैं और इन विभिन्न रसायनों

अंधकार से ऊपर उठो

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

यजुर्वेद में मंत्र आया “उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवेत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिर्त्तमम्” अर्थात् हम लोगों ने तमस अंधकार या पापों या पापों के अंधकार से उपरि ऊपर उठकर स्वः पश्यन्त प्रकाश को देखा और परमप्रकाशक ईश्वर को पा लिया। आगे बढ़कर देखा तो अधिक तेज वाले प्रकाश को पाया और आगे बढ़े तो हर प्रकाशित व प्रकाशक वस्तु में उसी परमप्रकाशक प्रभु की प्राप्ति हुई।

मनुष्य जब तक अपने स्वार्थों के वशीभूत काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष की कलुशित भावनाओं से घिरा रहता है तब तक वह प्रकाश को नहीं पा सकता। सत्य के प्रकाश को पाने के लिए मनुष्य को इन कलुशित भावनाओं के अंधकार और इसके जनक स्वार्थ की भावना को छोड़कर उपर उठना पड़ता है जिस प्रकार रात्रि के उपरान्त सूर्योदय के पश्चात भी यदि कोहरा छाया हुआ हो तो हमें प्रकाशक सूर्य के दर्शन नहीं होते, उसी प्रकार प्रकाश को पाने के लिए इस कोहरे रूपी अंधकार अर्थात् अज्ञानता, अबोधता, स्वार्थ जैसी कलुशित भावनाओं को त्याग कर, उपर उठना होता है। मनुष्य का यह उपर उठना भी एक क्रमिक विकास है जिस प्रकार घर की छत पर पहुंचने के लिए हमें सीढ़ी दर सीढ़ी उपर चढ़कर छत पर पहुंचना होता है ठीक उसी प्रकार अंधकार को छोड़कर प्रकाश की ओर जाना भी सीढ़ी दर सीढ़ी ऊपर चढ़ना होता है।

इसे समझने के लिए हमें आष्टांग योग के

सूत्रों को भी समझना चाहिए। यम नियमों का पालन किए बिना आसन प्राणायाम करने का अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता और यम नियम धारण किए बिना केवल कुछ आसन प्राणायाम का प्रदर्शन करने से कोई व्यक्ति योगी नहीं कहलाता। ठीक उसी प्रकार अंधकार से उपर उठकर प्रकाश को पा लेने की यात्रा भी एक क्रमिक विकास की यात्रा है। इसमें पहले “सवितर्दुरितानि परासुव” अर्थात् अपने समस्त दुर्गुणों दुर्व्यसनों को छोड़कर हम “यद् भद्रं तन्न आसुव” अर्थात् अपने लिए शुभ व कल्याणकारी भावनाओं को प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं।

तमसो मा ज्योतिर्गमय अंधकार से प्रकाश की ओर चलने की यात्रा का क्रम, अंधकार को छोड़ने से ही प्रारम्भ होता है। यहां तमस का अर्थ केवल अंधकार नहीं अपितु पाप व पापों का अंधकार भी है। पापों को छोड़े बिना पुण्य कर्म नहीं किए जा सकते। जैसे बर्तन को ठीक से साफ किए बिना उसमें शुद्ध जल भरकर भी पीने योग्य नहीं रह पाता ठीक उसी प्रकार पापों के पूर्ण त्याग के बिना पुण्य कर्म कर पाना संभव नहीं है। पापों का विश चाहे थोड़ी ही मात्रा में क्यों ना हो वह मनुष्य के क्रमिक विकास में बाधक बनता है।

अंधकार से ऊपर उठकर जब हम प्रकाश को देखते हैं तो अक्सर हमारी आंखें चुंधिया जाती हैं जैसे अंधेरी सड़क पर अचानक सामने से आए वाहन की तीव्र रोशनी में कुछ दिखाई नहीं देता और हमारी स्थिति प्रकाश होते हुए भी पुनः एक अंधे सरीखी हो

जाती है। ठीक उसी प्रकार जैसे अमावस्या की रात्रि में टिमटिमाते तारे को ही परम प्रकाश पुंज समझ लेना या फिर पूर्णिमा के चांद को ही समस्त प्रकाश का स्त्रोत मान लेना या फिर सूर्य को ऐसा समझ बैठना मनुष्य की अबोधता है। ‘तमस उपरि’ में ये क्रमिक विकास उत्तरोत्तर उपर बढ़ते रहने की प्रेरणा जो इस वेद मंत्र में दी गई है वह हमें इन सभी प्रकाशित व प्रकाशक वस्तुओं से भी उपर ले जाने की प्रेरणा देती है। मील के पत्थरों को ही अपनी मंजिल मानकर रुक जाने वाले कभी अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाते। यदि सीधे स्पष्ट शब्दों में कहें तो ये वेद मंत्र हमें गुरुडमवाद से बचने की प्रेरणा देते हुए उसी एक सर्वज्ञ को पाने की ओर इशारा करता है। यदि हम इसे और अधिक सरल शब्दों में समझें तो तमस उपरि में अंधकार से ऊपर उठकर प्रकाश को पाने की यह यात्रा उस परमपिता परमेश्वर तक पहुंचती है जिससे इस संसार की प्रत्येक वस्तु प्रकाशित हो रही है।

आइये इस वेद मंत्र की भावना को समझकर अंतर्यात्रा को प्रारम्भ करें और अपने ही अंदर अपनी आत्मा में विराजमान उस सर्वअन्तर्यामी परमपिता परमेश्वर को अनुभूत कर उसके प्रकाश से प्रकाशित हो जाएँ और अंधकार तमस रूपी कलुशित भावनाओं से सदा सर्वदा के लिए मुक्ति पा लें।

— 602 जी एच 53

सैक्टर 20, पंचकूला

मो. 09467608686 01724001895

आर्यो उठो! लक्ष्य की ओर बढ़े चलो

— आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, नई दिल्ली

देश धर्म की सेवा में जिसका जीवन व्यतीत होता है वह धन्य है। समग्रक्रांति के अग्रदूत दयानन्द ने अज्ञान, अन्याय अभाव रूपी कालिमा को दूर करने के लिए श्रुतिरूपी सूर्य के द्वारा भूमण्डल को आलोकित करने के लिए परोपकारार्थमिदं शरीरं के सिद्धान्त को अपने जीवन में ढाला था।

जिस देश के लिए देव दयानन्द ने विष के प्याले पीये तथा अपने आपको मिटा दिया। वही देश आज विधर्मियों से आक्रान्त हो रहा है। जहाँ कभी दूध, घी की नदियाँ बहती थी आज वहाँ शराब, अण्डे, माँस का बाजार गर्म हो रहा है। चारों ओर अशान्तता के बादल मंडरा रहे हैं।

आज हम ऐसे दौर से गुजर रहे हैं, जिसमें हमारी तनिक भी उदासीनता हमारे पतन का कारण बनेगी। केवल वेद की जयघोष से ही काम नहीं चलेगा आज आवश्यकता आचरण की है।

आर्यो! तर्क की तलवार चलाना सीखो।

बात जो मुंह से कहो करके दिखाना सीखो।

बहरे जजबात में तूफान उठाना सीखो।

अपनी तदबीर से तकदीर बनाना सीखो।

रहता कोई नहीं आज नसल की खूबी।

देखी जाती हैं जमाने में अमल की खूबी।

इतिहास साक्षी है, जब शाहजहां की बेटी बीमार हुई तब अनेकों वैद्य, हकीमों को बुलाकर इलाज करवाया गया, परन्तु बीमारी ठीक नहीं हुई। किसी ने कहा डॉक्टर बाटन से इलाज करवाये। डॉ. बाटन अंग्रेज डॉक्टर था। संयोगवश आवंटन की दवाई से शाहजहां की बेटी ठीक हो गई। बादशाह ने कहा मांगिये आप क्या चाहते हैं? शाहजहां का विचार था कि बाटन बीस तीस हजार रुपया मांगेगा या भूमि। परन्तु बाटन के स्वार्थत्याग को देखिये उस व्यक्ति ने अपने लिए कुछ नहीं मांगा अपितु बाटन कहता है कि अंग्रेज जो यहाँ व्यापार करने आये हैं

उन्हें तंग न किया जाये। उस समय यह बात साधारण सी लगी, परन्तु थोड़े स्वार्थ त्याग के फलस्वरूप इस देश में अंग्रेजों का राज्य हो गया।

आर्यजनों! उठो! जागो!

स्वार्थ के बजाय परमार्थ के लिए जीओ।

अहंकार भाव न रखूँ, न ही किसी पर क्रोध करूँ।

देख दूसरे की उन्नति को कभी न ईर्ष्याभाव धरूँ।

रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ।

आज भवन तो बन गये, परन्तु भावना नहीं बन पाई। त्यागमर्ति की जगह राम मूर्ति की पूजा हो रही है चरित्र के स्थान पर चातुर्य का साम्राज्य दृष्टिगोचर हो रहा है। जातिवाद, प्रान्तीयवाद, छुआछूत, भेदभाव एवं आपसी कलह के कारण देश की अवनति हो रही है। आर्यों की इतनी शक्ति है कि ये सारे देश का नेतृत्व कर सकते हैं, परन्तु आपसी लड़ाई झगड़े के कारण आर्यों की शक्ति क्षीण हो रही है।

आज स्थिति यह है —

सूक्त संगठन के पढ़के बिखरते रहे।

पाठ शांति का पढ़ के झगड़ते रहे।

गैर को न अपना बना ही सके।

अपनों से बिछुड़ने से क्या फायदा?

ऋषि दयानन्द के निर्वाण के बाद जो दीप जले, उनमें आर्य समाज के प्रति बहुत तड़प थी। आज वह भावना नहीं अतएव आर्य समाज अत्युन्नति के शिखर पर आरुढ़ नहीं हो रहा है। आज आर्य समाज अपने पुण्य प्रताप से जीवित है। महर्षि दयानन्द जी का त्याग व बलिदान, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का संगठन व परिश्रम, पं. लेखराम जी की लेखनी एवं कठिन तपस्या, महात्मा हंसराज जी के आदर्श, लाला लाजपतराय का

व्यक्तित्व एवं दृढ़ लगन, वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी का प्रचार—प्रसार, गुरुदत्त विद्यार्थी एवं भाई परमानन्द जी के आदर्श कार्य तथा कुछ लेखकों एवं कवियों की कृति व अपने पिछले गौरव से आज आर्य समाज जीवित दीख रहा है, अन्यथा आज इसकी स्थिति शोचनीय है।

आर्यवीर राष्ट्र की मशाल, को संभाल चलो।

एक दीप बुझ चुके तो, दूसरों को बार चलो।

यह दयानन्द की कसम, यह श्रद्धानन्द की कसम।

वन्दनीय मात्रभूमि बोल, विश्वमातरम्।

प्रिय पाठकवृन्द! आज का युग प्रचार का युग है। जिन्होंने प्रचार साधनों का उपयोग नहीं किया, वह पिछड़ गया।

जो कौम गाती नहीं, वह मिट जाती है। वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन केवल चार दीवारी तक सीमित रहता है। जरूरत है पाकों में वेद का आयोजन हो। कुरान को लोगों ने अफ्रीका के जंगलों तक पहुंचा दिया, परन्तु वेद को हम पूरे भारत में नहीं पहुँचा पायें।

जब कोई शास्त्रार्थ करने के लिए ऋषि दयानन्द के पास आता था तब ऋषि कहते थे कि मुझे केवल वेद का प्रमाण चाहिए, दूसरे किसी अन्य ग्रन्थ का नहीं।

शास्त्रार्थ करने के लिए आये हुए पंडित कहने लगे हमने तो वेद को देखा ही नहीं। वेद को तो शंखासुर ले गया। ऋषि दयानन्द उन पण्डितों को ललकारते हुए कहा — ये तुम्हारे प्रमाद के कारण है। तुम्हारे प्रमादरूपी शंखासुर का वध करके वेद लाया हूँ। आर्यवीरों आर्यराष्ट्र के निर्माण में प्राणपण से जुट, स्वयं जगें, दूसरों को जगायें।

सच को सच कहें, मगर चुप न रहें।

जो भी है सूरते हालात कहो चुप न रहो,

घेर लाया है अंधेर में हमें कौन? हफीज

आओ कहने की जो है बात काहे, चुप न रहो।

ग्राम भौरा कला, जिला-मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में 5वाँ सामवेद पारायण महायज्ञ सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की उपस्थिति में सम्पन्न



गत 28 से 30 मार्च, 2018 को ग्राम भौराकला, जिला-मुजफ्फरनगर, उ. प्र. में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 5वाँ सामवेद पारायण महायज्ञ आयोजित किया गया। इसकी पूर्णाहुति 30 मार्च, 2018 को हुई। परिषद् के व्यायामाचार्य ब्र. सहसरपाल आर्य के संयोजन में हुए इस महायज्ञ के ब्रह्मा पद को क्रांतिकारी कवि संन्यासी स्वामी सत्यवेश जी ने सुशोभित किया तथा अंकित शास्त्री ने वेदपाठ किया। आर्य समाज की प्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती संगीता आर्या के ओजस्वी भजनों का क्रांतिकारी कार्यक्रम तीनों दिन चलता रहा। 29 मार्च को प्रातः यज्ञोपरान्त बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने अपने उपदेशामृत से श्रोताओं को कृतार्थ किया। 29 मार्च, 2018 की शाम और 30 मार्च को प्रातः सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी व्याख्यान हुए जिन्हें श्रोताओं ने मन्त्रमुग्ध होकर सुना। स्वामी आर्यवेश जी ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान प्रारम्भ करने पर बल देते हुए कहा कि अब आर्यों को नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, धार्मिक पाखण्ड एवं अश्लीलता आदि के विरुद्ध

खड़े हो जाना चाहिए और देश में जन-चेतना यात्राएँ और युवा प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना चाहिए। पूर्णाहुति के अवसर पर डॉ. इकबाल सिंह आर्य, श्री ज्योति प्रकाश, श्री राजवीर सिंह आर्य, श्री नरेश बालियान, श्री मनोज कुमार, डॉ. देवेन्द्र सिंह, श्री अर्पण बालियान, श्री देवेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री साधुराम, श्री करतार सिंह चैयरमैन, श्री रामफल सिंह, श्री सज्जन एवं श्री जगदीश, श्री बीटू सुपुत्र श्री रणवीर सिंह, श्री राजीव आदि सभी भौराकला निवासी तथा जिला उपप्रतिनिधि सभा शामली के प्रधान

श्री रघुवीर आर्य, श्रीपाल आर्य, महात्मा रणवीर आर्य कुटवा-कुटवी, श्री बलजोर सिंह आर्य, श्री गोपीराम आर्य तथा श्री प्रेम सिंह आर्य-सिसौली, श्री ऋषिपाल आर्य-खरड़, श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री उदयवीर सिंह-एल्लम, श्री ओमवीर सिंह राणा, श्री हरिसिंह आर्य-मुंडहर, श्री रतन सिंह दसोगा-लाख, श्री बॉबी प्रधान-भाजू आदि महानुभाव अनेक गाँवों से सम्मेलन में उपस्थित थे।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का क्षेत्र के आर्यजनों ने जोरदार स्वागत किया। कार्यक्रम के संयोजक ब्र. सहसरपाल आर्य ने सभी सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापित करके उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। स्वामी आर्यवेश जी का आतिथ्य श्री राजवीर सिंह आर्य ने अपने निवास पर किया और उनका विशेष सम्मान करके अतिथि यज्ञ की परम्परा का निर्वहन किया। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसमें सभी महानुभावों ने सुस्वादु भोजन का आनन्द उठाया। कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।



कन्या गुरुकुल लोवा कलां, तहसील-बहादुरगढ़, हरियाणा का वार्षिक समारोह एवं स्व. बहन शान्ति आचार्या का 85वाँ जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया



4 अप्रैल, 2018 को श्री रणजीत स्मारक कन्या गुरुकुल लोवा कलां का वार्षिक समारोह तथा इस गुरुकुल की दीर्घकालीन तक संचालिका रहीं बहन शान्ति आर्या का 85वाँ जन्मोत्सव अत्यन्त धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भी अपना आशीर्वाद प्रदान करने के लिए समारोह में सम्मिलित हुए। स्वामी जी के अतिरिक्त गुरुकुल के प्रधान श्री नारायण सिंह देहलान एडवोकेट, स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, महामण्डलेश्वर, स्वामी देवेन्द्रानन्द गिरि, श्री सुखवीर सिंह शास्त्री तथा श्री सहदेव बेधड़क ने भी उपस्थित होकर अपने विचार प्रस्तुत किये। समारोह के मंच का संचालन गुरुकुल की आचार्या बहन राजन मान ने बड़ी कुशलता के साथ किया। समारोह की सम्पूर्ण व्यवस्था का कार्य आचार्या राजन मान के अतिरिक्त बहन विद्यावती, बहन कृष्णा व बहन मूर्ति ने अथक परिश्रम करके सफलता के साथ संभाला हुआ था। इन चारों बहनों के संगठित प्रयास से गुरुकुल इस समय दिन-दूनी, रात-चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर

है। समारोह में सर्वश्री हरिओम दलाल, राजवीर छिकारा, आचार्य राममेहर कुरुक्षेत्र, बहन दयावती आर्या, उम्मेद सिंह आर्य खुमाना आदि भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री सहदेव बेधड़क ने अपने जोशीले भजनों से श्रोताओं को विशेष रूप से प्रभावित किया। समारोह में गुरुकुल की छात्राओं ने नाटक, गीत तथा विविध कार्यक्रम प्रस्तुत करके अपनी प्रतिभाओं का विशेष प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गुरुकुलों में कन्याओं की शिक्षा-दीक्षा का कार्यक्रम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि यदि कन्यायें संस्कारित होंगी, उन्हें उचित शिक्षा मिलेगी तो वह अपने परिवार को भी संस्कारित कर पायेंगी। किसी कन्या को शिक्षित करना, संस्कारित करना दो परिवारों को संस्कारित करने के समान है। क्योंकि वह अपने पिता के घर को और विवाह के बाद अपने पति के परिवार को संस्कारित करेगी। स्वामी जी ने कहा कि इस गुरुकुल में यही कार्य हो रहा है। उन्होंने कहा कि कन्याओं को शिक्षित करने से कन्याओं में आत्मबल पैदा होता है जिसके कारण उन्हें जीवन पथ पर हिम्मत के साथ आगे बढ़ने में सहायता मिलती है। उन्होंने कहा कि गुरुकुल की आचार्या राजन मान अत्यन्त विदुषी हैं और यहाँ पढ़ रही कन्याओं के साथ बहुत परिश्रम कर रही हैं। इस गुरुकुल को आगे बढ़ाने के लिए, उन्नत करने के लिए आप सब भरपूर सहयोग प्रदान करें।

कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।



चौ. दीवान सिंह मेमोरियल पब्लिक स्कूल, ग्राम-नगूरा, जिला-जीन्द, हरियाणा के वार्षिक समारोह में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया पारितोषिक वितरण तथा स्वामी रामवेश जी ने किया यज्ञ सम्पादित



31 मार्च, 2018 को ग्राम-नगूरा, जिला-जीन्द, हरियाणा में स्थित चौ. दीवान सिंह मेमोरियल पब्लिक स्कूल में वार्षिक समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने प्रातः 8 से 9 बजे तक यज्ञ सम्पन्न कराया तथा स्कूल के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिया। मुख्य कार्यक्रम में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त चौ. वीर सिंह दलाल पूर्व विधायक, चौ. धर्मपाल खटकड़, प्रधान लगूरा खाप, चौ. चेताराम प्रधान कंडेला, चौ. महेन्द्र सिंह रेडू मालिक लक्ष्य डेरी, चौ. चेताराम आर्य, चौ. सज्जन सिंह दलाल, डॉ. यादराम दानपुर, श्री धर्मवीर पूर्व सरपंच, श्री जगदीश आर्य दाड़ला आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

विद्यालय के चेयरमैन श्री सत्यवीर सिंह दलाल, स्कूल के प्रधानाचार्य श्री रोहताश डिल्लो, स्कूल के संचालक श्री प्रेम सिंह दलाल आदि ने आगन्तुक महानुभावों का मोमेंटो देकर सम्मान किया। मंच का कुशल संचालन श्रीमती संजू डिल्लो तथा स्कूल के खेल अधिकारी श्री मनीष आर्य ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया।

इस अवसर पर स्वामी रामवेश जी ने बच्चों को संस्कार देने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि संस्कार देने में माता-पिता तथा गुरु यदि अपने

इस दायित्व को नहीं निभाते तो बच्चों का सही निर्माण नहीं हो सकता। श्री जगदीश आर्य ने स्कूलों में भारतीय संस्कृति को बच्चों के दिल और दिमाग में उतरने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि लॉर्ड मैकाले की शिक्षा बच्चों को अंग्रेजियत से जोड़ती है। अतः हमें अपने स्कूलों में भारतीय संस्कृति से बच्चों को अवगत कराना चाहिए।

अपने ओजस्वी उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि शिक्षा मनुष्य को शिक्षित बनाती है, किन्तु यदि शिक्षा के साथ नैतिक मूल्यों की शिक्षा न दी जाये तो वह शिक्षा अधूरी रह जाती है। स्वामी जी ने कहा कि आज उच्चकोटि की डिग्रियाँ प्राप्त करने वाले और शिक्षित कहलाने वाले लोग ही नैतिकता की धज्जियाँ उड़ाते हैं। बड़े-बड़े भ्रष्टाचार करके देश के साथ गद्दारी करते हैं और अनेक अनैतिक कार्यों में उच्च शिक्षा प्राप्त अधिकारी अथवा नेता लिप्त पाये जाते हैं। ऐसी शिक्षा से मनुष्य को अथवा समाज को कोई विशेष लाभ नहीं होता। अतः आवश्यकता है कि शिक्षा के साथ संस्कार व नैतिक मूल्य अवश्य जोड़े जायें।



इस अवसर पर चौ. वीर सिंह दलाल ने भी स्कूल की उन्नति की कामना करते हुए उपस्थित सभी अभिभावकों से कहा कि वे स्कूल में हर प्रकार से सहयोग करें। स्कूल के प्रधान श्री सत्यवीर सिंह दलाल ने सभी आगन्तुक महानुभावों का कोटिशः धन्यवाद किया। यह समारोह पूर्णतया आर्य समाज के सम्मेलन की तरह मनाया गया और प्रत्येक वक्ता ने आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द जी के सम्बन्ध में उद्गार प्रकट किये। आर्य समाज के युवा विद्वान् श्री सुनील शास्त्री ने अपने ओजस्वी भजनों से कार्यक्रम में नई जान डाल दी। स्कूल की प्रगति एवं उपलब्धियों पर भी स्कूल के

प्रधानाचार्य श्री रोहताश डिल्लो ने प्रकाश डाला। अन्त में स्कूल के सभी अध्यापक तथा मैनेजिंग कमेटी के सदस्यों ने स्वामी आर्यवेश जी के साथ सामूहिक चित्र खिंचवाकर इन स्मृतियों को सुरक्षित किया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बच्चों द्वारा प्रदर्शित प्रतिभा के लिए उन्हें पारितोषिक देकर आशीर्वाद प्रदान किया। पूरा कार्यक्रम विशेष रूप से श्री मनीष आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, जीन्द तथा ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रयास एवं प्रेरणा से आयोजित किया गया।

श्री बाबूलाल आर्य के बड़े भाई श्री रघुवीर सिंह जी का निधन सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दी श्रद्धांजलि

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के अन्तरंग सदस्य श्री बाबूलाल आर्य के बड़े भाई श्री रघुवीर सिंह जी का गत दिनों निधन हो गया, वे 90 वर्ष के थे। श्री रघुवीर सिंह जी परिवार में दो पुत्र एवं पांच पुत्रियाँ तथा पौत्रादि से भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ का विशेष आयोजन 4 से 6 अप्रैल, 2018 को उनके निवास स्थान ग्राम पाली, जिला-महेन्द्रगढ़ में किया गया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, ब्र. दीक्षेन्द्र जी, बहन पूनम व बहन प्रवेश आर्या जी, श्री इन्द्र सिंह आर्य पूर्व एस.डी. एम. आदि ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

यज्ञ के उपरान्त उपस्थित पारिवारिकजनों एवं शुभचिन्तकों को सान्त्वना देते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने श्री रघुवीर सिंह जी को समाज का एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व बताया। उन्होंने कहा कि अपने पांच भाईयों में सबसे बड़े श्री रघुवीर सिंह जी ने आर्य समाज से सबसे अपने आपको जोड़ा तभी से वे आर्य समाज की गतिविधियों में विशेष सहयोग करने लगे थे। श्री रघुवीर सिंह जी के पूज्य पिता श्री खेमचन्द्र जी भी क्षेत्र के जाने-माने व्यक्ति थे। उनके छोटे भाई श्री बाबूलाल आर्य, आर्य समाज के एक मजबूत स्तम्भ हैं। जिनकी प्रेरणा



से बाल्मीकि समाज के सैकड़ों परिवार आर्य समाज से जुड़े हैं और उनके बच्चे गुरुकुलों में पढ़कर विद्वान् एवं विदुषी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। श्री रघुवीर सिंह जी के देहावसान पर शोकसभा के बदले वेद प्रचार का आयोजन किया गया। जिसमें श्री दीपचन्द्र आर्य

भजनोपदेशक के गीतों का कार्यक्रम सराहनीय रहा। उनके इस आयोजन में सैकड़ों लोगों ने भाग लिया और श्री रघुवीर सिंह जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री रघुवीर सिंह जी के पुत्र श्री नरेश कुमार तथा श्री रविन्द्र कुमार होनहार नवयुवक हैं और अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए आर्य समाज के कार्यों में विशेष योगदान प्रदान करते हैं।



माता सुरजीत कौर का देहावसान

कसबा निसंग, करनाल निवासी स्व. श्री लाल सिंह मदान की धर्मपत्नी माता सुरजीत कौर का गत दिनों अमेरिका में अपने पुत्र गुरिन्दर सिंह बिट्टा के निवास पर निधन हो गया। उनके पार्थिव शरीर को श्री बिट्टा तथा उनके भतीजे मनिन्दर सिंह कैनेडी हवाई जहाज से करनाल लाये तथा यहाँ पर उनकी विधिवत अन्त्येष्टि की गई। माता सुरजीत कौर के बड़े पुत्र श्री नरेन्द्र सिंह लाडी ने उनके पार्थिव शरीर को मुखार्पित दी।

1 अप्रैल, 2018 को दिवंगत आत्मा की शांति के लिए उनके करनाल स्थित निवास पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें हजारों लोगों ने सम्मिलित होकर दिवंगत माता जी

को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। स्व. माता सुरजीत कौर एक धार्मिक विचारों से ओत-प्रोत, उदारता एवं ममता की प्रतिमूर्ति थीं। उनके अमेरिका प्रवास के दौरान सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी



आर्यवेश जी भी उनसे दो-तीन बार मिल चुके थे तथा उनसे धार्मिक चर्चा करने का अवसर भी मिला था। माता जी एक सात्विक वृत्ति से ओत-प्रोत देवी स्वरूपा थीं। उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए स्वामी आर्यवेश जी, ब्र. दीक्षेन्द्र जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी 1 अप्रैल, 2018 को करनाल पहुँचे और शोक संतप्त परिवार को सान्त्वना दी। स्वामी जी के सुझावानुसार माता जी के सुपुत्रों श्री नरेन्द्र सिंह तथा श्री गुरिन्दर सिंह बिट्टा और पौत्रों मंदीप सिंह कैनेडी तथा मनिन्दर सिंह कैनेडी आदि ने माता जी की अस्थियों को उनके कृषि फार्म हाउस पर जमीन में दबाकर पेड़ लगाने का तथा राख को पौधों पर डालने का संकल्प किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर उपस्थित सभी परिजनों को वैदिक सिद्धान्तानुसार जीवात्मा की गति एवं जीवन मृत्यु के सम्बन्ध में उपदेश देकर ढाँढस बंधाया तथा दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

पृष्ठ-2 का शेष

सत्य – असत्य में सत्य को कैसे परखें ?

के गुणों का अध्ययन करने पर पाते हैं कि इन रसायनों में मोहक सुगंध, बैक्टीरियारोधी, रोगाणुनाशक, कवकनाशक यानी एंटीफंगल, हृदय को पुष्टकारक, दिमाग को शांत करनेवाला, औषधीय गुण आदि होते हैं जिसके कारण ही यह हमें उत्तम स्वास्थ्य देते हैं। जिन पदार्थों में हानिकारक, जहरीले रसायन होंगे वह हमें हानिकारक जहरीले होंगे। इन्ही विज्ञान की कसौटी पर भी हम घृत को स्वास्थ्य के लिए लाभदायक कह सकते हैं।

(3) प्रत्यक्ष प्रमाण :- सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 7 में स्वामी दयानंद जी ने प्रत्यक्ष प्रमाण हेतु लिखा है,

“प्रश्न – ईश्वर में प्रत्यक्ष प्रमाण कभी नहीं घट सकता।

उत्तर – “जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन कार्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख– दुख, सत्यासत्य विषयों के साथ संबंध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है, उसको ‘प्रत्यक्ष’ कहते हैं, परंतु निम्न है।”

हम बाजार में क्रय करते सामग्रियों को भली भाँति आँख, नाक, कान, हाथ आदि यानी जिस मद का जैसे जिन जिन तरीकों से परीक्षण हो सकता है, द्वारा परीक्षण करते हैं कि वह सामग्री सही, ठीक है या नहीं। ऐसे विभिन्न कर्मों को करने के पहले उससे प्राप्त होने वाले लाभ हानि आदि को उपरोक्त वर्णित तीनों कसौटियों में से जिस जिस कसौटी पर परीक्षण हो सकता है, द्वारा परीक्षण करना, सोचना विचारना चाहिए क्योंकि कई तथ्य विज्ञान की कसौटी पर “वैज्ञानिक ज्ञान” उपलब्ध न होने के कारण तत्काल संभव न हो। भौतिक कर्मों का भौतिक रूप से ही प्रत्यक्ष प्रमाण में लाभ मिलना ही चाहिए और यह प्रमाण सर्वमान्य होना चाहिए।

अब हम कुछ तथ्यों के सत्यता एवं हानि लाभ का उपरोक्त कसौटियों पर विचार करते हैं।

उदाहरण 1:- घृत का दीपक जलाना – हम प्रायः कहते हैं तथा पुस्तकों में घृत विशेषकर गाय के घृत का दीपक जलाना बहुत ही लाभदायक हैं। स्वामी रामदेव जी ने भी प्राणायाम रहस्य पुस्तक में घर के अंदर प्राणायाम करते समय घृत का दीपक जलाने को लिखा है कि इससे वायु शुद्ध होता हैं। दीपक जलाने में जल रही सामग्री का दहन धीरे धीरे होता है और इससे चारों ओर प्रकाश फैलता है परंतु कोई अन्य लाभ या सुगंधादि प्रत्यक्ष में प्राप्त नहीं होता है। इसे हम तीनों कसौटियों पर परखते हैं।

पहली कसौटी शास्त्रों की – सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास-11 में विभिन्न प्रकार के अग्नियों में ‘लौयुक्त अग्नियों’ के प्रभाव को दर्शाने हेतु, उदाहरण में स्वामी दयानंद जी ने ज्वालामुखी संबधी एक प्रश्न के उत्तर में लिखा है कि “जैसे बघार के घी के चमचे में ज्वाला आ जाती, अलग करने से वा फूँक मारने से बुझ जाती, थोड़ा सा घी को खा जाती, शेष छोड़ जाती, उसी के समान वहां भी है। जैसे चूल्हे की ज्वाला में जो डाला जाय, सब भस्म होता, जंगल वा घर में लग जाने से सबको खा जाती है”। क्योंकि बघार, चूल्हे, जंगल, घरों आदि में लगी अग्नि “लौयुक्त” ही होती है अतः यह अग्नि, विघ्वंसक यानी पदार्थों के मूल रूप एवं गुणों को छिन्न भिन्न कर भस्म यानी नष्ट करने वाली होती है और इससे हमें उष्मा, प्रकाश यानी गर्मी के साथ कार्बन डाईआक्साइड गैस आदि ही मिलती है। यह बातें हम सब स्वयं कर सत्यापित कर सकते हैं और अपने जीवन में दिन प्रतिदिन प्रत्यक्ष में देखते हैं। जब बघार की ज्वाला यानी लौ, बघार के घृत को खा यानी नष्ट कर जाती है तो इसी प्रकार वह दीपक के घृत की ज्वाला यानी लौ द्वारा धीरे धीरे प्रकाश, उष्मा पैदा करते हुए खा जाती है। बघार एवं दीपक की ज्वालाएँ एक समान हैं तो उनके प्रभाव आदि समान ही होंगे क्योंकि समस्त अग्नियाँ, ज्वालाएँ एवं घृत तथा हवा के घटक आक्सीजन में हो रही रासायनिक क्रियाएँ आदि जड़ ही होती हैं जिनका गुण व्यवहार, सभी दहनों के साथ एक जैसा समान होगा, कुछ भी भिन्न नहीं हो सकता है। दोनों में कोई भेद नहीं हो सकता है।

दूसरी कसौटी विज्ञान की – मेरे ज्ञान में आर्य साहित्य में विज्ञान के आधार पर कुछ नहीं लिखा है कि घृत आदि के दहन के बाद कौन कौन से पदार्थ, रसायन पैदा होती हैं और उनके गुण क्या क्या होते हैं। इसलिए हम आधुनिक विज्ञान की पुस्तकों आदि को देखते हैं। विज्ञान के पुस्तकों एवं गूगल सर्च के पन्नों के अनुसार जब भी कोई पदार्थ लौ के साथ जलता है, तब उस पदार्थ के समस्त रसायनों एवं वायु के घटक आक्सीजन में रासायनिक क्रिया होती है जिसके फलस्वरूप कार्बन डाईआक्साइड गैस, कुछ अन्य गैसों अल्प मात्रा में, कुछ पानी भाप के रूप में एवं अत्यधिक उर्जा गर्मी, प्रकाश पैदा होती है, जिससे वातावरण में उष्मा एवं प्रकाश फैलती है अतः यही घृत के दीपक में जलाने से मिलता है जिससे वायु में कोई लाभदायक रसायन हवा में नहीं फैलती हैं अर्थात् घृत के दीपक जलाने से हमें प्रकाश के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं मिलता है बल्कि कार्बन डाईआक्साइड गैस द्वारा हवा प्रदूषित होता है।

तीसरा कसौटी प्रत्यक्ष प्रमाण की – जब हम जलते हुए घृत के दीपक को एकाएक बुझाते हैं तब 1 – 2 सेकंड के लिए थोड़ा सा सफेद रंग का धुँवाँ हवा में उठता है और उसी समय थोड़ी सी सुगंध घृत की हवा में फैलती है। अब हमें निर्णय लेना है कि घृत का दीपक जलाना चाहिए या नहीं क्योंकि इससे हमें मात्र प्रकाश और उष्मा एवं हवा को प्रदूषित करने वाली कार्बन डाईआक्साइड गैस आदि ही मिलती है।

उदाहरण 2:- फूलों का तोड़ना – वर्तमान में कई आर्य समाजियों द्वारा आर्य समाज एवं विभिन्न घरेलू अवसरों पर फूलों से सजावट किया जाता है एवं फूलों की मालाएं पहनी पहनायी जाती हैं। क्या ऐसा करना सत्य, उचित, लाभदायक है जिसको हम विभिन्न कसौटियों पर परखते हैं।

पहली कसौटी शास्त्रों की – सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 11 में मूर्ति पूजा के अधर्म होने के लिखित, 15 हानियों में पंद्रहवा हानि – “परमेश्वर ने पुष्पादि सुगंध, वायु – जल के दुर्गन्ध निवारण और

आरोग्यता के लिये बनाये हैं, उनको पुजारी तोड़ कर नष्ट कर देते हैं। पूर्ण सुगन्ध के समय तक उसका सुगंध होता है, उसका नाश मध्य में ही कर देते हैं। पुष्पादि कीच के साथ मिल –सड़ कर उल्टा दुर्गंध उत्पन्न करता है। इसलिये मूर्तिपूजा करने में पाप होता है। इत्यादि पापों का मूल कारण पाषाणादि मूर्ति पूजा भी है।” इस प्रकार फूलों को तोड़ना एवं माला पहनना, पहनाना भी पाप है। फूलों की सजावट, माला पहनना पहनाना आदि का किसी वेद, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि आदि पुस्तकों में वर्णन नहीं है।

दूसरी कसौटी विज्ञान की – एक फूल जितने दिन पेड़ में लगा रहता है, उतने दिन उसमें सुगंधित रसायन हर क्षण बनते रहते हैं और वह हवा में फैल कर लाखों लोगों को नसिका से ग्रहण होकर लाभ देते रहते हैं। जिस क्षण यानी समय पर फूल को तोड़ा जाता है, उसी क्षण यानी समय से सुगंध बनना बंद हो जाता है और उसका सड़न प्रक्रिया प्रारंभ हो जाता है। सड़न में कई गैसों जैसे कार्बन डाईआक्साइड, फार्मलडिहाइड, इथेनल आदि हानिकारक, हवा को प्रदूषित करती है तथा हवा में रोगाणु भी फैलते हैं।

तीसरी कसौटी प्रत्यक्ष प्रमाण की – हम प्रत्यक्ष में देखते हैं कि विभिन्न अवसरों, समारोहों के समाप्त होने के बाद जहां फूलों को रखा जाता है या फेंका जाता है वह वहीं सूखने, मुरझाने एवं सड़ने लगता है और कई दिनों बाद उससे बदबू भी आने लगती है अर्थात् फूलों का तोड़ना उचित नहीं है बल्कि हानिकारक, वायु को प्रदूषित करना है। इस तर्कपूर्ण तथ्य से सभी को सहमत होना चाहिये। इस प्रकार फूलों को तोड़ना पूर्णतः अवैदिक, आर्य समाज के विरुद्ध है और पर्यावरण के हित में नहीं है तथा विज्ञान सम्मत भी नहीं है। जिस कार्य से किसी का अहित होता है, वह कार्य पापमय होता है अतः फूलों का तोड़ना पाप है।

उदाहरण 3:- मनुष्यों द्वारा मांसाहार – विदेशों एवं भारत में भी बहुत लोग शाकाहारी एवं बहुत से लोग मांसाहारी भी हैं। इसमें क्या उचित है का भी परीक्षण परखना आवश्यक है।

पहली कसौटी शास्त्रों की – स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखे वेद भाष्यों, सत्यार्थ प्रकाश एवं आर्य आदि विद्वानों द्वारा लिखे शास्त्रों के भाष्यों में मांसाहार के लिए कोई आदेश नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश के भूमिका एवं विभिन्न समुल्लासों में मांसाहार के विरोध में लिखा है। वेदों में मांस भक्षण एवं स्पष्ट रूप से किसी भी प्राणि को मारकर खाने का स्पष्ट निषेध किया गया हैं। जैसे – (1) हे मनुष्यों ! जो गौ आदि पशु हैं वे कभी भी हिंसा करने योग्य नहीं हैं – यजुर्वेद1/11। (2) जो लोग परमात्मा के सहचरी प्राणी मात्र को अपनी आत्मा का तुल्य जानते हैं अर्थात् जैसे अपना हित चाहते हैं वैसे ही अन्यो में भी वर्तते हैं – यजुर्वेद 40/7। (3) हे दांतों तुम चावल खाओ, जौ खाओ, उड़द खाओ और तिल खाओ। तुम्हारे लिए यही रमणीय भोज्य पदार्थों का भाग हैं। तुम किसी भी नर और मादा की कभी हिंसा मत करो। – अथर्ववेद 6/140/2। (4) वह लोग जो नर और मादा, भ्रूण और अंडों के नाश से उपलब्ध हुए मांस को कच्चा या पकाकर खाते हैं, हमें उनका विरोध करना चाहिए– अथर्ववेद 8/6/23। इस प्रकार से अनेक प्रमाण वेदों में मांसाहार के विरुद्ध मिलते हैं। कुछ लोग मांसाहार विशेष रूप से गौमांस के समर्थन में कुछ तर्क देते हैं, वे वेदों के मन्त्रों की गलत व्याख्या निकालने के कारण हैं। ऐसे ही रामायण एवं महाभारत में भी मांसाहार का प्रकरण नहीं है। अतः आर्य आदि साहित्यों में मांस खाना नहीं लिखा है।

दूसरी कसौटी विज्ञान की – परमपिता परमात्मा ने विभिन्न प्राणियों के आहार का निर्धारण स्वतः ही किया है और वैसा ही उसके शरीर की संरचना बनाया है, जैसे–गाय, हिरण, हाथी, घोड़े, बकरी आदि के लिए घास, अन्न, फल आदि और बाघ, कुत्ता बिल्ली आदि के लिए मांस। परमात्मा ने उन–उन प्राणियों के शरीर की रचना भी आहार को सहजता से प्राप्त करने, खाने एवं पचाने योग्य बनाया है जैसे – (1) शाकाहारी प्राणी के संतान की आंखें पैदा होते ही खुलती हैं, बंद नहीं रहती जबकि मांसाहारी प्राणी के बच्चों की आंखें पैदा होने पर बंद रहती हैं, जो 2–3–4 दिनों बाद खुलती हैं। (2) शाकाहारी प्राणियों के नाखून तीक्ष्ण नहीं होते, पंजे नहीं होते जबकि मांसाहारी प्राणियों के पंजों पर नाखून तीक्ष्ण व नुकीले होते हैं ताकि शिकार को आसानी से फाड़कर उसे खा सकें। (3) शाकाहारी प्राणियों के पांव की रचना से चलते समय आवाज हो सकती है जबकि मांसाहारी प्राणियों के पांव के तलवे ऐसे (गद्दीदार) होते हैं जिससे चलने में आवाज न हो, ताकि अपने शिकार को सुगमता से प्राप्त कर सकें। (4) शाकाहारी प्राणियों के बचपन के दांत गिरकर पुनः नये दांत आते हैं जबकि मांसाहारी प्राणियों के बचपन के दांत गिरकर पुनः दूसरे नये दांत नहीं आते। (5) शाकाहारी प्राणियों के आंतों की लम्बाई उनके शरीर से 8 से 10 गुना बड़ी होती है जैसे गाय की आंत सबसे अधिक लंबी लगभग 160 फीट की होती है इसलिए गाय मर सकती है, पर मांस नहीं खा सकती है जबकि मांसाहारी प्राणियों के आंतों की लम्बाई कम होती है, कारण? मांस आंतों में ज्यादा समय न रहे और मांस जाते ही पचना आरम्भ हो जाये जैसे शेर की आंत केवल 8 फीट की होती है। (6) शाकाहारी प्राणियों के हरित द्रव्य पचाने की शक्ति होती है जबकि मांसाहारी प्राणियों के हरित द्रव्य पचाने की क्षमता नहीं होती। (7) शाकाहारी प्राणियों के लीवर व पित्ताशय छोटा होता है जबकि मांसाहारी प्राणियों के लीवर व पित्ताशय शरीर के परिमाण से बड़ा रहता है। (8) शाकाहारी प्राणियों के आंखें बादाम जैसी आकृति की होती हैं और रात्रि, अंधेरे में पूर्णतः नहीं देख सकते जबकि मांसाहारी प्राणियों के आंखें गोल होती हैं, रात्रि, अंधेरे में स्पष्ट दिखायी पड़ता है। (9) शाकाहारी प्राणी स्वभावतः साधन होते हुए भी शिकार नहीं करते, और न ही ये शिकार कला में निपुण होते हैं जबकि मांसाहारी प्राणी किसी हथियार या साधन के बिना ही शिकार कर सकते हैं। मांसाहारी जीव शिकार कला में स्वाभाविक ही निपुण होते हैं। (10) शाकाहारी प्राणियों के श्वास-प्रश्वास क्रिया धीमी अर्थात् मंद गति होने के कारण ये दीर्घ जीवन (लम्बी आयु) वाले होते हैं तथा

समाज में रहना पसंद करते हैं जबकि मांसाहारी प्राणियों के श्वसन प्रक्रिया तेज अर्थात् गतिमान होने के कारण ये दीर्घ आयु वाले नहीं होते तथा समूह में अर्थात् झुंड में रहना पसंद नहीं करते। (11) शाकाहारी प्राणियों में खून पीने की इच्छा स्वाभाविक रूप से नहीं होती इसलिए खून पचा भी नहीं सकते तथा इनका रक्त क्षारयुक्त होता है जबकि मांसाहारी प्राणियों के खून पीने की तीव्र इच्छा होती है और खून पचा सकते हैं। इनका रक्त आम्लयुक्त होता है। (12) शाकाहारी प्राणियों के शरीर की बाहरी ऊर्जा का उत्सर्जन जिसे आभा कहते हैं अधिक होता है जबकि मांसाहारी प्राणियों के शरीर की ऊर्जा कम उत्सर्जित होती है, अतः शरीर से बाहर उत्सर्जन कम मात्रा में होता है। (13) शाकाहारी प्राणियों के खाद्य पाचन के लिए जो इन्झीमीज तैयार होता है वह केवल वनस्पती–जन्म पदार्थों को ही पचा सकता है। वनस्पति के सेवन से एसिड, टोडोीन्स नहीं होते, उत्तेजना न होने से स्वभाव शान्त व दयालु किस्म का होता है जबकि मांसाहारी प्राणियों के मांस को पचाने वाला इन्झीमीज तैयार होता है। मांस में एसिड और ज्वलपदे बहुत हैं जिसके कारण उत्तेजना होती है, परन्तु शक्ति नहीं आती तथा हिंसक प्राणियों का स्वभाव क्रूर व भयानक किस्म का होता है।

तीसरी कसौटी प्रत्यक्ष प्रमाण की – अब हम प्रत्यक्ष में देख सकते हैं कि मांसाहारी और शाकाहारी प्राणियों के शरीर की रचना में परमात्मा ने किस प्रकार भेद निर्माण किया है। (1) शाकाहारी प्राणियों के मुख में दाढ़े यानी मसूढ़े होती हैं जिसे वे अन्न, घास पत्ते आदि को चबा चबा कर पीस देते हैं। दांतों में अंतर नहीं होता जबकि मांसाहारी प्राणियों के मुख के अग्र भाग में तीक्ष्ण नुकीले दो दांत किल्ले रूप में होते हैं ताकि वो अन्य शिकार प्राणियों को फाड़–फाड़कर खा सकें और उनके दाढ़े नहीं होने से यह मांस रुपी भोजन को सीधा सटकते हैं, पीसकर नहीं खाते तथा दांतों में भी अन्तर होता है। जबड़े में मांस चीरने के दांत होते हैं जैसे शेर कुत्ते भेड़िया इत्यादि के जबड़े में 4 चीरक दांत होते हैं जो की मनुष्य के जबड़े में नहीं होते हैं। (2) शाकाहारी प्राणी होंठों द्वारा मुंह में घूंट भरकर पानी पीते हैं जैसे मनुष्य गाय भैंस बकरी हाथी इत्यादि जबकि मांसाहारी प्राणी जीभ से चाट–चाट कर यानी लपलपा कर पानी पीते हैं जैसे शेर चीता बिल्ली कुत्ता भेड़िया आदि। (3) शाकाहारी प्राणी साधारणतः रात्रि में सोते हैं तथा दिन में जागते एवं चलते फिरते हैं जबकि मांसाहारी प्राणी रात्रि में चलते फिरते हैं, दिन में प्रायः सोते रहते हैं। (4) शाकाहारी प्राणी क्रूरता, धोखाधड़ी आदि नहीं करते, बलवान होते हैं, इनके कार्य करने की क्षमता अधिक होती है तथा इनमें आत्मिक व शारीरिक बल अधिक पाया जाता है जबकि मांसाहारी प्राणी क्रूर, धोखेबाज, दगाबाज एवं चालाक प्रकृति के होते हैं, आत्मिक व शारीरिक शक्ति कम रहने के कारण कार्य करने की क्षमता कम होती है। (5) शाकाहारी प्राणियों के भूखा रहने की क्षमता बहुत होती है तथा भूख रहने पर भी किसी को हानि पहुंचाने की भावना नहीं रखते जबकि मांसाहारी प्राणी भूख न रहने पर भी दूसरे प्राणियों को मारते हैं। (6) शाकाहारी प्राणियों को श्रम करने पर विशेषकर भाग–दौड़ करने पर पसीना आता है जैसे मनुष्य भैंस गाय बकरी हाथी इत्यादि जबकि मांसाहारी प्राणियों को छलांग मारते हुए अर्थात् बहुत दौड़ने पर भी पसीना नहीं आता जैसे शेर कुत्ता बिल्ली इत्यादि। (7) शाकाहारी प्राणियों में माँ का वात्सल्य (प्रेम) अधिक रहता है, भूख लगने पर अपने बच्चों को माँ कदापि नहीं खाती जबकि मांसाहारी प्राणियों के हिंसक जीव मातृत्व में भूख लगने पर क्रूरता से अपने बच्चों को स्वयं खा जाते हैं।

एक परीक्षण करने पर पाया गया कि एक 6–7 मास का शिशु है। उसके सामने लाल–लाल पपीते के टुकड़े थाली में रखे गये और दूसरी थाली में रक्त से सने हुए मांस के लाल–लाल टुकड़े रखे गये। जब शिशु को उन थालियों की दिशा में छोड़ा गया, तो यह दृश्य देखा गया कि वह निष्पाप अज्ञान निरामिश शिशु पपीते के टुकड़े की ओर ही गया, मांस के टुकड़े उसे आकर्षित नहीं कर सके। अतः मनुष्य मांसाहारी प्राणी नहीं है, शाकाहारी है इसकी पुष्टि इस बात से भी हो जाती है

जब परमात्मा ने ही हिंसक प्राणी यथा–सिंहादि का आहार मांस बनाया है तो यदि वे प्राणी किसी अन्य प्राणी को मारकर अपनी भूख मिटाते हैं तो उसमें पाप–पुण्य, हिंसा इत्यादि नहीं होती। परमात्मा ने सर्वश्रेष्ठ मानव प्राणी को शाकाहारी ही बनाया है इसकी शरीर रचना से यह सिद्ध होता है। जन्म से प्राप्त मन के झुकाव को प्रकृति स्वभाव कहते हैं और जन्म के बाद सीखी हुई बातों को आदत कहते हैं। अतः मनुष्य स्वभावतः शाकाहारी है, मांसाहार एक आदत है।

उपरोक्तानुसार अन्य कार्यो–कर्मों तथ्यों को भी उपरोक्त 3 कसौटियों पर कस कर परख कर सत्य लाभदायक विधि का निर्धारण किया जाना चाहिए। आप विद्वानों से निवेदन है कि इस लेखनी पर अपना सुझाव, राय, टिप्पणी अथवा इसमें जो कभी गलती लगे तो उसे, अवश्य ही मुझे डाक, मोबाइल मेसेज, व्हाट्सअप मैसेज, ईमेल पर भेजने का कष्ट करें, जिसका मैं उत्तर, निराकरण भेजूंगा और आपका आभारी रहूंगा। सहमति होने पर, इसका प्रचार प्रसार करने का कष्ट करें।

वेद प्रकाश गुप्ता, मो.–9451734531, ईमेल–अमकचतंहनचर्ज/तमकपॉडिंपसण्ववउ

जब हवियों को आधार बना कर अग्नि प्रदीप्त हो जाती है, ज्वालाएं लपटें मारने लगती हैं तब बीच में, श्रद्धा से आज्यभागाहुती नाम की दो आहुतियां डाली जाती हैं।

व्याख्या – कर्म में मुख्य यज्ञ है इसलिए पहले उसी के करने की शिक्षा दी गई है। यज्ञ दो प्रकार से किए जाते हैं, एक फल की इच्छा से, दूसरे कर्त्तव्य पालन करने के लिए, केवल धर्म समझकर फल की इच्छा को छोड़ कर करना। इनमें पहला मनुष्य को आवागमन के चक्र में रखता है और दूसरा मोक्ष के कारणों में से एक कारण बना करता है। दोनों प्रकार की भवनाओं वाले यज्ञ का प्रारम्भ इसी प्रकार किया जाता है। जैसा इस वाक्य में वर्णन है।।2/11।।

आर्य जगत् के महान् वीतराग संन्यासी
पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) के जन्मदिवस के अवसर पर
दयानन्द मठ चम्बा में 5 व 6 मई, 2018 को होगा

विशाल आर्य महासम्मेलन

आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय है, भारी संख्या में पहुँचकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

— आचार्य महावीर सिंह, अध्यक्ष, दयानन्द मठ, चम्बा (हिमाचल प्रदेश)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती पर रैली

उदयपुर 10 फरवरी, 2018 आर्य समाज हिरण मगरी आर्य समाज पिछोली एवं महर्षि दयानन्द कन्या विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ती के अवसर पर समाजजनों, छात्राओं, अध्यापिकाओं ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरण रैली निकाली। बालिका पढ़ाओ, देश बचाओ, छुआछूत मिटाओ, मद्यपान, धूम्रपान निषेध के खिलाफ घोष लगा जागरुकता का संदेश दिया। आर्य समाज के संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापडिया के निर्देशन में निकाली गई इस रैली में सर्वश्री डॉ. प्रेमचन्द गुप्त, भंवरलाल आर्य, सत्यप्रिय शास्त्री, सुरेश चौहान, कृष्ण कुमार सोनी, श्रीमती शारदा गुप्त, पुष्पा सिंधी, प्रकाश श्रीमाली, इन्द्र प्रकाश यादव, राजकुमार गुप्ता, सरला गुप्ता आदि ने उत्साह से भाग लिया एवं वैदिक धर्म एवं देश भक्ति के जयघोष लगाये।

आर्य समाज हाउसिंग बोर्ड कालोनी, पलवल का 9वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हाउसिंग बोर्ड कालोनी, पलवल का 9वाँ वार्षिकोत्सव 11 से 15 अप्रैल, 2018 तक धूमधाम से मनाया जा रहा है जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध धर्माचार्य, आर्य संन्यासी व प्रसिद्ध भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर महात्मा श्रद्धानन्द जी सरस्वती, श्री कृष्ण आर्ष गोमत के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद शतकम राष्ट्रभूत महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। सामरोह में प्रातः 8 से 10.30 बजे तक यज्ञ व प्रवचन तथा दोपहर 3 से 5.30 बजे तक भजनोपदेश व प्रवचन होंगे। 15 अप्रैल, 2018 को पूर्णाहुति एवं समापन समारोह के अवसर पर 8 से 12 बजे तक 21 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न होगा। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

आर्य समाज हरजेन्द्रनगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश का 49वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हरजेन्द्रनगर, कानपुर-7, उ. प्र. का 49वाँ वार्षिकोत्सव 13 से 15 अप्रैल, 2018 तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्, मनीषी, साध्वी उत्तमा यती, आचार्य रामप्रसाद जी, भजनोपदेशक पं. संदीप वैदिक सहित अनेकों विद्वान् तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर 12 अप्रैल, 2018 को अपरान्ह 3 से 6 बजे तक विशाल शोभा यात्रा निकाली जायेगी। प्रतिदिन 7 से 11 बजे तक एवं सायं 6.30 से रात्रि 10.30 बजे तक यज्ञ एवं भजन प्रवचनों का कार्यक्रम चलता रहेगा। 15 अप्रैल, 2018 को समापन तथा यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न होगी तथा आर्य महिला सम्मेलन एवं शंका-समाधान के सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे।

नव निर्माण एवं विश्व शांति के आधार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम व शहीदे आजम भगतसिंह माँ भारती के प्रेरणा स्तम्भों की स्मृति में यज्ञ व सभा

मर्यादा व क्रान्ति के समन्वय से ही रामराज्य-‘यश’

जयपुर, मानव निर्माण एवं विश्व शांति अभियान के तहत आर्य समाज समन्वय समिति, महिला आर्य समाज वैदिक सत्संग मण्डल मानसरोवर व आर्य समाज जयपुर दक्षिण की ओर से अनेक स्थानों पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम व शहीदे आजम भगतसिंह की स्मृति में यज्ञ व सभाओं का आयोजन किया। मानसरोवर के ओउमानन्दम् परिसर में बिना रथ बिना पादुका वाले रघुवीरा श्रीराम की पितृ व गुरु भक्ति, यम नियमों की पालना, दृढ़ता पूर्वक शील- संयम, धैर्य तथा शौर्य गुणों से जीत का मार्मिक चित्रण। मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद प्रदेशाध्यक्ष यशपाल ८ यश८ ने किया। यश ने कहा कि मर्यादा व क्रान्ति के समन्वय से ही रामराज्य कायम होगा। श्याम अग्रवाल ने मंत्र पाठ किया तथा रामनरेश जावा यज्ञमान रहे ओम प्रकाश गुप्ता व सुगनाराम चौधरी ने विचार रखे।

विजय पथ मानसरोवर में भगतसिंह राजगुरु सुखदेव के 88वें शहीद दिवस पर यश ने क्रान्तिकारियों के जीवन व दर्शन पर प्रकाश डाला। यश ने कहा कि भगतसिंह रुढ़ियों से वगाबती, शोषण विरोधी, विचारक राष्ट्रवाद की जलती मशाल थे।

डॉ. सुमित्रा आर्य के संयोजन में सम्पन्न कार्यक्रम को सैनी नर्सिंग कॉलेज के शिवदयाल विहान, विपिन सारस्वत, अभिषेक गुप्ता, रविकांत जाटव, दीपक गुर्जर, अभिषेक तंवर आदि छात्रों की प्रस्तुतियों ने ओजपूर्ण वह मनमोहक बनाया। सुनिल अरोड़ा, सुधा मित्तल, जवाहर लाल वधबा, मीना रामपुरा, सरोज गुप्ता, प्रभा त्रिपाठी, सुमन वंशल, मुन्नी, मीरा शर्मा व शुभाषिनी कपूर के क्रान्तिकारी गीत व भाषण हुए।

8 अप्रैल को होगी आर्य लेखक परिषद् की बैठक

आर्य लेखक परिषद् की साधारण बैठक 8 अप्रैल (रविवार) 2018 को प्रातः 11 बजे आर्य समाज एवं आर्ष गुरुकुल, आर्यनगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली के (नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास) सभागार में आयोजित की गई है। बैठक में परिषद् की आगामी गतिविधियों, आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों और आर्य लेखक परिषद को विस्तार देने जैसे अनेक मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। बैठक में परिषद् के साधारण सदस्यों, संरक्षकों, सम्पोषकों, मार्गदर्शकों और आर्य लेखकों को आमंत्रित किया गया है।

— अखिलेश आर्येन्दु

बैठक संयोजक, आर्य लेखक परिषद्, नई दिल्ली, मो. 8178710334 / 9868235056

अण्डाक : aryalekhakparishad@gmail.com

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद में एक नया प्रकल्प प्रारम्भ

बिना परीक्षा दिये आर्ष प्रणाली से अष्टाध्यायी (प्रथम वृत्ति तथा द्वितीया वृत्ति) धातु वृत्ति महाभाष्य निरुक्त तथा अन्य वेदांगों और उपांगों के अध्ययन के लिए जुलाई, 2018 से इस गुरुकुल में नया प्रकल्प प्रारम्भ किया जा रहा है। इस योजना के अन्तर्गत प्रवेशार्थी छात्रों के लिए निम्नांकित अर्हताएँ अनिवार्य हैं।

1. वैदिक धर्म के प्रचारार्थ सुयोग्य वेद विदुषी बनने की जिसमें तीव्र उत्कंठा तथा समर्पणभाव हो।
2. छात्रा 10वीं कक्षा उत्तीर्ण हो या तत्समकक्ष योग्यता रखती हो।
3. उपर्युक्त समस्त पाठ्य विषयों का अध्यापन काल सप्तवर्षीय है। इसलिए निर्धारित 7 वर्ष की अवधि से पूर्व छात्रा गुरुकुल छोड़कर नहीं जा सकेगी।
4. छात्रा के माता-पिता या अभिभावक आचार्या की अनुमति से वर्ष में दो बार गुरुकुल में आकर मिल सकेंगे।
5. छात्रा के प्रवेश के तीन माह के अन्दर आचार्या द्वारा उसकी बौद्धिक तथा अनुशासनात्मक वृत्ति का परीक्षण किया जायेगा। इन दोनों दृष्टियों से आचार्या की संतुष्टि और सहमति के अनन्तर ही छात्रा अग्रिम अध्ययन के लिए चयन की जा सकेगी।
6. इस वर्ष 2018-19 सत्र में इस प्रकल्प के अतिरिक्त सामान्य प्रवेश की प्रक्रिया सम्पन्न नहीं होगी। अर्थात् किसी नवीन छात्रा का किसी अन्य योजना के अन्तर्गत प्रवेश नहीं लिया जायेगा।

निवेदिका — आचार्या डॉ. प्रियम्बदा वेद भारती, व्याकर्णाचार्या वेद-नैरुक्ताचार्या
गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, जिला-बिजनौर, उत्तर प्रदेश
मो.:-9412824424

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित अनुपम साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध

33 पुस्तकों का 620 /— रुपये का सैट
मात्र 370 /— रुपये में प्राप्त करें

1. यजुर्वेद	250.00	17. वेद का इस्लाम पर प्रभाव	3.00
2. बन्दा वीर बैरागी	18.00	18. वैदिक धर्म की रूपरेखा	22.00
3. आस्तिक नास्तिक संवाद	7.00	19. वैदिक कोष संग्रह	15.00
4. वेद संदेश	10.00	20. विवेकानन्द विचार धारा	8.00
5. आत्मा का स्वरूप	8.00	21. विषलता इस्लाम की फोटो	8.00
6. आचार्य शुक्रराज शास्त्री	5.00	22. वैदिक सिद्धान्त	20.00
7. आर्य ध्वज	3.00	23. धर्मान्तरण	10.00
8. आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या	20.00	24. नारायण स्वामी जीवनी	8.00
9. गो-हत्या या राष्ट्र हत्या	15.00	25. काशी शास्त्र	3.50
10. दयानन्द वचनमृत	5.00	26. आदर्श त्रैतवाद	35.00
11. इक्कीसवीं सदी का भारत	4.00	27. ब्रह्म उपासना	8.00
12. मुगल साम्राज्य का क्षय भाग-1, 2	20.00	28. वेद निबन्ध स्मारिका	30.00
13. मुगल साम्राज्य का क्षय भाग-3, 4	15.00	29. आर्य समाज के संगठनात्मक सूत्र	20.00
14. वेदांग प्रकाश	20.00	30. श्रद्धांजलि	12.00
15. वैदिक सूक्ति सुधा	5.00	31. शिखों का तुष्टिकरण	2.00
16. वेद और आर्य शास्त्रों में नारी	4.00	32. एक ही मार्ग	3.00
		33. मतान्तरण के अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र	4.00

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित उपरोक्त 33 पुस्तकों का 620 रुपये का सैट महर्षि निर्वाण दिवस (दीपावली) पर 40 प्रतिशत की विशेष छूट पर मात्र 370 रुपये में दिया जा रहा है। डाक से भेजने पर डाक व्यय 130 रुपये अलग से देने होंगे, इस तरह से डाक से मंगाने वाले महानुभावों को कुल 500 रुपये भेजने होंगे। यह राशि “सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा” के नाम से डी.डी. या मनीआर्डर द्वारा भेज सकते हैं और यदि स्वयं आकर ले जाते हैं तो उन्हें डाक व्यय नहीं देना होगा।

प्राप्ति स्थान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

“दयानन्द भवन”, 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

दूरभाष :- 011-23274771, 23260985

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें



आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अविवरण की दशा में लौटाएँ -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

‘श्रीमद्दयानन्द प्रकाश’
लेखक - स्वामी सत्यानन्द,
मूल्य 150 रुपये, पृष्ठ - 455

‘मनुस्मृति’
भाष्यकार पं. तुलसीराम स्वामी,
मूल्य 200 रुपये, पृष्ठ - 595

उपरोक्त दोनों पुस्तकें बढ़िया कागज व प्रिंटिंग के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-2 पर 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध हैं। डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में विश्व इतिहास में पहली बार

हरिद्वार चलो

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को

हरिद्वार चलो

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का हरिद्वार में होगा भव्य आयोजन

सभी गुरुकुल एवं आर्यजन अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।

निवेदक

हरिद्वार चलो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

हरिद्वार चलो

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

दूरभाष :- 011-23274771, 23260985

ई-मेल :- sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्वाकांक्षी योजना



घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी



चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य
4100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 18 मार्च, 2018 तक अग्रिम धनराशि जमा कराने पर केवल 2800/- रुपये में प्राप्त कर सकेंगे।

4100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठाएँ। डाक व्यय 200/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 'चैक/बैंक ड्राफ्ट' द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

— प्रकाशक :—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
दूरभाष :- 011-23274771, 23260985 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

आवेदन आमंत्रित हैं!

राष्ट्र शिक्षक गौरव सम्मान
हरियाणा शिक्षक गौरव सम्मान

जलियाँवाला बाग के शहीदों की स्मृति में

शिक्षक गौरव सम्मान समारोह

14 अप्रैल, 2018 प्रातः 10 से 1 बजे तक

स्थान- स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक, हरियाणा

आवेदन की अंतिम तिथि:- 5 अप्रैल, 2018

शाम : 5 बजे तक

सान्निध्य स्वामी आर्यवेश जी

आयोजक

युवा निर्माण अभियान

सम्पर्क: 9416968999 9354840454

9416086348 9416659781 9891558375 9729555765

आवेदन ईमेल से भेजें: myaward2018@gmail.com

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.: 0-9849560691, 0-9013251500

ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com

वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतेक्यता होना अनिवार्य नहीं है।